Fc – मोती का दृष्टांत मत्ती १३:४५-४६ | 1

– Save This Page as a PDF–

मोती का दृष्टांत

मत्ती १३:४५-४६

खोदाई: यह दृष्टांत छिपे हुए खजाने के दृष्टांत के साथ कैसे मेल खाता है? प्रत्येक दृष्टान्त किसका प्रतिनिधित्व करता है? ऐसा कैसे? वह हमें धर्मशास्त्र में कहां मिलता है? इसे किस भावना और ऊर्जा से आगे बढ़ाया जाना चाहिए? यदि दृष्टांत इसलिए दिए गए थे ताकि विश्वासयोग्य लोग उन्हें समझ सकें, तो मसीहा के शिष्यों को मोती के दृष्टांत को पहली बार सुनने पर पूरी तरह से समझने से किसने रोका? येशुआ ने अपने यहूदी श्रोताओं की कुछ धारणाओं को कैसे उजागर किया।

चिंतन: क्या आपने कभी लागत की गणना किए बिना निवेश किया है? इसका आध्यात्मिक मामलों से क्या संबंध है? क्या आप ऑल-इन हैं, या आप अपना दांव टाल रहे हैं?

मोती के दृष्टांत का एक प्रमुख बिंदु यह है कि अन्यजातियों को भी मसीहा के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा और उन्हें अदृश्य सार्वभौमिक चर्च में शामिल किया जाएगा।

तीसरा दोहा छिपे हुए खजाने (इज़राइल) और मोती (अन्यजातियों) के दृष्टान्तों से युक्त है, जो दर्शाता है कि शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को मसीहा (इफिसियों २:१४ एचसीएसबी) द्वारा गिरा दिया गया है और यहूदियों और अन्यजातियों मिलकर अदृश्य सार्वभौमिक चर्च का निर्माण करते हैं। यीशु अब गलील सागर के किनारे भीड़ के सामने नहीं, बल्कि पतरस के घर में अपने चेलों के साथ अकेले हैं।

जबकि बाइबल से पता चलता है कि छिपे हुए खजाने का दृष्टांत इज़राइल का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह बिल्कुल नहीं बताता कि मोती क्या दर्शाता है। हालाँकि, जब इसे प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया जाता है, तो निहितार्थ यह है कि यह दो कारणों से अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करता है। सबसे पहले, यह पिछले दृष्टांत में यहूदियों के साथ परिणामी विरोधाभास प्रदान करेगा, क्योंकि रहस्यमय साम्राज्य में यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं। दूसरे, मोती की उत्पत्ति समुद्र में होती है, जो गोयिम का एक सामान्य प्रतीक है (दानिय्येल ७:२३; प्रकाशितवाक्य १७:१ और १५)।

Fc – मोती का दृष्टांत मत्ती १३:४५-४६ | 2



घर के अंदर अपनी शिक्षा जारी रखते हुए, यीशु
ने एक और दृष्टांत सिखाया, कहा: फिर, स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की तलाश में है। जब उसे एक बहुत मूल्यवान वस्तु मिली, तो वह चला गया और अपने पास जो कुछ था उसे बेचकर उसे मोल ले लिया (मत्ती १३:४५-४६)। जाहिर है कि व्यापारी ने उस विशेष मोती को अपने अन्य सभी मोतियों की तुलना में अधिक मूल्यवान माना, क्योंकि वे उसके पास मौजूद सभी मोतियों की बिक्री में शामिल होते।

जिस समय यीशु ने पतरस के घर में बारहों को ये दृष्टान्त दिये, वे उनका अर्थ पूरी तरह से नहीं समझ पाये थे, जितना वे समझ पाये थे कि मसीह को क्रूस पर क्यों मरना पड़ा। विशेष रूप से ऐसा रहस्य जैसे अन्यजातियों को इस्राएल के पौष्टिक जैतून के पेड़ में लगाया जा रहा है (रोमियों ११:१७-२५)। दरअसल, मसीहा को उन्हें जंगली घास का दृष्टान्त समझाना था। लेकिन फिर भी दृष्टान्तों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि थी क्योंकि मसीह के पिता के पास आरोहण के बाद वे उसके शब्दों को याद रखेंगे और उस समय उन्हें पूरी तरह से समझेंगे। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने अपने मंत्रालय की शुरुआत में मंदिर के न्यायालयों को मंजूरी दे दी थी, तब यहूदियों ने ऐसा काम करने के अपने अधिकार को साबित करने के लिए एक संकेत मांगा था। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया: इस मन्दिर को नष्ट कर दो, और मैं इसे तीन दिन में फिर खड़ा करूंगा। उन्होंने उत्तर दिया, “इस मन्दिर को बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और तुम इसे तीन दिन में खड़ा करने जा रहे हो?” परन्तु जिस मन्दिर की उसने बात की थी वह उसका शरीर था। मृतकों में से जीवित होने के बाद, उनके शिष्यों को वह बात याद आई जो उन्होंने कही थी। तब उन्होंने पवित्रशास्त्र और यीशु द्वारा कहे गए शब्दों पर विश्वास किया (यूहन्ना २:१३-२२)।

यह दृष्टान्त दो उपबिंदु बनाता है। सबसे पहले, मसीह के घावों ने अदृश्य सार्वभौमिक चर्च के अन्यजातियों को खरीद लिया। दूसरे, वे क्रमिक अभिवृद्धि द्वारा बनते हैं, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा मोती विकसित होता है जब कोई विदेशी पदार्थ सीप में गिरता है। सीप इस कण को ढँकना शुरू कर देती है, और इसे ढँकती रहती है, और इसे ढँकती रहती है, जब तक कि यह धीरे-धीरे मोती नहीं बन जाती। चर्च के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक अन्यजातियों के बीच से उसके नाम के लिए लोगों को बुलाना है जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा नहीं हो जाता (प्रकाशितवाक्य An –

Fc – मोती का दृष्टांत मत्ती १३:४५-४६ | 3

अन्यजातियों के समय पर मेरी टिप्पणी देखें)। यह वास्तव में इस दृष्टांत द्वारा चित्रित है।

अपने दृष्टांतों के संबंध में, येशुआ ने अपने यहूदी श्रोताओं की कुछ धारणाओं को उजागर किया। रब्बी सिखाते हैं कि आने वाली दुनिया में पूरे इज़राइल का हिस्सा है। उनका मानना था कि सिर्फ इसलिए कि वे यहूदी थे, उन्हें स्वर्ग के राज्य में प्रवेश मिलना तय था। इन दृष्टांतों ने उन्हें आगाह किया कि वे राज्य को हल्के में न लें। केवल वे ही इसमें प्रवेश करेंगे जो इसके अथाह मूल्य को समझते हैं और सब कुछ बलिदान करने को तैयार हैं। ध्यान दें कि जिस व्यक्ति को खजाना मिला उसने अपनी सारी संपत्ति खुशी-खुशी बेच दी (मत्ती १३:४४; फिलिप्पियों ३:७-८ भी देखें)। उद्धार के साथ भी ऐसा ही है। पुनर्जीवित न हुए मन के लिए, येशुआ हा-मेशियाच को सब कुछ देने का विचार बेतुका है। हालाँकि, एक विश्वास करने वाला हृदय बहुत खुशी के साथ पापियों के उद्धारकर्ता के प्रति समर्पण करता है। पाप से शानदार मुक्ति और अनन्त जीवन का अंतहीन आशीर्वाद (देखें Ms– विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा) ईश्वर के अधिकार के प्रति समर्पण की लागत से कहीं अधिक है।

वह चला गया और उसके पास जो कुछ था उसे बेच दिया। क्या यह दृष्टांत सिखाता है कि पापियों को मसीह के पास आने से पहले पाप करना बंद कर देना चाहिए? नहीं, उनका तात्पर्य यह है कि बचाने वाला विश्वास कोई विशेषाधिकार नहीं रखता। यीशु आप सभी को चाहता है। बचाने वाला विश्वास किसी पसंदीदा पाप, किसी क़ीमती संपत्ति, किसी गुप्त सुख से जुड़ा नहीं है। यह बिना शर्त समर्पण है, प्रभु जो कुछ भी करने के लिए कहते हैं उसे करने की इच्छा। अनन्त जीवन एक मुफ़्त उपहार है (रोमियों ६:२३)। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई लागत नहीं है। येशुआ ने पहले ही अपने खून से फिरौती चुका दी है। विरोधाभास यह है: उद्धार मुफ़्त और महंगा दोनों है। स्पष्ट रूप से, एक नया विश्वासी विश्वास के क्षण में मसीहा के प्रभुत्व के सभी परिणामों को पूरी तरह से नहीं समझता है (देखें Bw– विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है)। हालाँकि, सच्चे विश्वासी में समर्पण की इच्छा होती है। यही चीज़ सच्चे भरोसे को नकली पेशे से अलग करती है। सच्चा विश्वास विनम्र, आज्ञाकारी और आज्ञाकारी होता है। जैसे-जैसे आध्यात्मिक समझ बढ़ती है, आज्ञाकारिता गहरी होती जाती है और राज्य का प्रत्येक बच्चा अपने प्रभुत्व के लिए सब कुछ त्यागकर हमारे उद्धारकर्ता को प्रसन्न करने की उत्सुकता प्रदर्शित करता है। यह नई सृष्टि की अपरिहार्य अभिव्यक्ति है (दूसरा कुरिन्थियों ५:१७)।

छिपे हुए खजाने और मोती के दृष्टांत उन लोगों के लिए एक स्पष्ट चेतावनी हैं जो पहले लागत की गणना किए बिना अपराध करेंगे। गुरु ने चंचल भीड़ को चेतावनी दी कि उनका अनुसरण करने से पहले लागत को ध्यान से गिनें (लूका १४:२८-३३)। बुद्धिमान निवेशक आमतौर पर अपना सारा पैसा एक ही निवेश में नहीं लगाते हैं। लेकिन इन दो दृष्टांतों में पुरुषों ने बिल्कुल यही किया। पहले आदमी ने सब कुछ बेचकर एक खेत खरीदा, और दूसरे आदमी ने सब कुछ बेचकर एक मोती खरीदा। लेकिन उन्होंने लागत की

Fc – मोती का दृष्टांत मत्ती १३:४५-४६ | 4

गणना कर ली थी, वे जानते थे कि उन्होंने जो खरीदा है वह सर्वोच्च निवेश के लायक है। एक बार फिर, यह विश्वास बचाने का एक आदर्श उदाहरण है। जो लोग वास्तव में प्रभु में विश्वास करते हैं वे अपना दांव टालते नहीं हैं। शिष्यत्व की कीमत को जानते हुए, सच्चा विश्वासी एक प्रतिबद्धता बनाता है और यीशु मसीह को सब कुछ दे देता है।

जिन नौ दृष्टांतों पर हमने गौर किया है, उनमें विचार का एक बुनियादी प्रवाह विकसित होता है: (१) मिट्टी का दृष्टांत (Et) सिखाता है कि पूरे चर्च युग में सुसमाचार का बीजारोपण होगा। (२) बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत (Eu) सिखाता है कि सुसमाचार के बीज में एक आंतरिक ऊर्जा होगी जिससे वह अपने आप जीवन में आ जाएगा।
(३) गेहूँ और जंगली घास का दृष्टांत (Ev) सिखाता है कि सच्ची बुआई का अनुकरण झूठी प्रति-बुवाई द्वारा किया जाएगा। (४) सरसों के बीज का दृष्टांत (Ew) सिखाता है कि दृश्यमान चर्च असामान्य बाहरी विकास ग्रहण करेगा। (५) ख़मीर का दृष्टांत (Ex) सिखाता है कि दृश्य चर्च का सिद्धांत भ्रष्ट हो जाएगा। (६) छिपे हुए खजाने का दृष्टांत (Fb) सिखाता है कि सैद्धांतिक भ्रष्टाचार के साथ भी, एक अवशेष को इज़राइल से बचाया जाएगा। (७) मोती का दृष्टांत (Fc) सिखाता है कि अदृश्य सार्वभौमिक चर्च के अन्यजातियों को भी मसीह का बचाने वाला ज्ञान प्राप्त होगा। यहूदी और अन्यजाति दोनों मिलकर, छिपे हुए खजाने और मोती से अदृश्य सार्वभौमिक चर्च बनाते हैं।